

This question paper contains 2 printed pages.

Roll No. :
Unique Paper Code : **12137902**
Name of the Paper : **Art of Balanced Living**
Name of the Course : **B.A. (H), Sanskrit, DSE, LOCF**
Semester : **V**
Duration : **3 Hours**
Maximum Marks : **75**

टिप्पणी:

1. इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत या हिन्दी या अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिए, परन्तु सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।
2. इस प्रश्नपत्र में कुल 6 प्रश्न हैं। इनमें से किन्हीं 4 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सबके अङ्क समान हैं।

Note:

1. Answers should be written in **Sanskrit** or in **Hindi** or in **English** but the same medium should be used throughout the paper.
2. There are **total 6 questions** in this question paper. **Attempt any 4 questions.** Each question contains equal marks.
1. बृहदारण्यकोपनिषद् के आधार पर याज्ञवल्क्य के इस कथन – 'न वा अरे देवानां कामाय देवाः प्रिया भवति' को स्पष्ट कीजिए।
Explain this statement of Yagyavalkya - '*na vā are devānāṃ kāmāya devāḥ priyā bhavati*' on the basis of Bṛhadāraṇyakopaniṣad.
2. श्रवण-मनन एवं निदिध्यासन आत्मज्ञान में किस प्रकार सहायक है? अद्वैत-वेदान्त के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
How are Hearing (śravaṇa), Reflection (manana) & meditation (nididhyāsana) helpful in self-knowledge? Explain on the basis of Advaita Vedanta.
3. पातञ्जलयोगदर्शन के आधार पर योग के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए योग के बहिरंग साधनों का वर्णन कीजिए।
Explaining the nature of Yoga on the basis of Yoga Philosophy of Patanjali, describe the external means of Yoga.

4. 'चित्तं हि प्रख्याप्रवृत्तिस्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्' कथन के आधार पर चित्त के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए चित्तवृत्तिनिरोध के उपायों का विवेचन कीजिए।
'*Cittaṃ hi prakhyāpravṛttisthitiśīlatvāt triguṇam*' explaining the nature of the Citta on the basis of the statement, discuss the methods of cittavṛttinirodha.
5. गीता के आधार पर सन्तुलित जीवन के लिए 'कर्मयोग' की उपयोगिता का वर्णन कीजिए।
Describe the usefulness of Karma-yoga for a balanced life on the basis of Gita.
6. 'अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्' पंक्ति के आधार पर गीता में ज्ञानयोग के महत्त्व पर प्रकाश डालिये।
'*adhyātmajñānanityatvaṃ tattvajñānārthadarśanam*' on the basis of this statement of the Gita, explain the significance of Jñāna-yoga (Yoga of Knowledge).